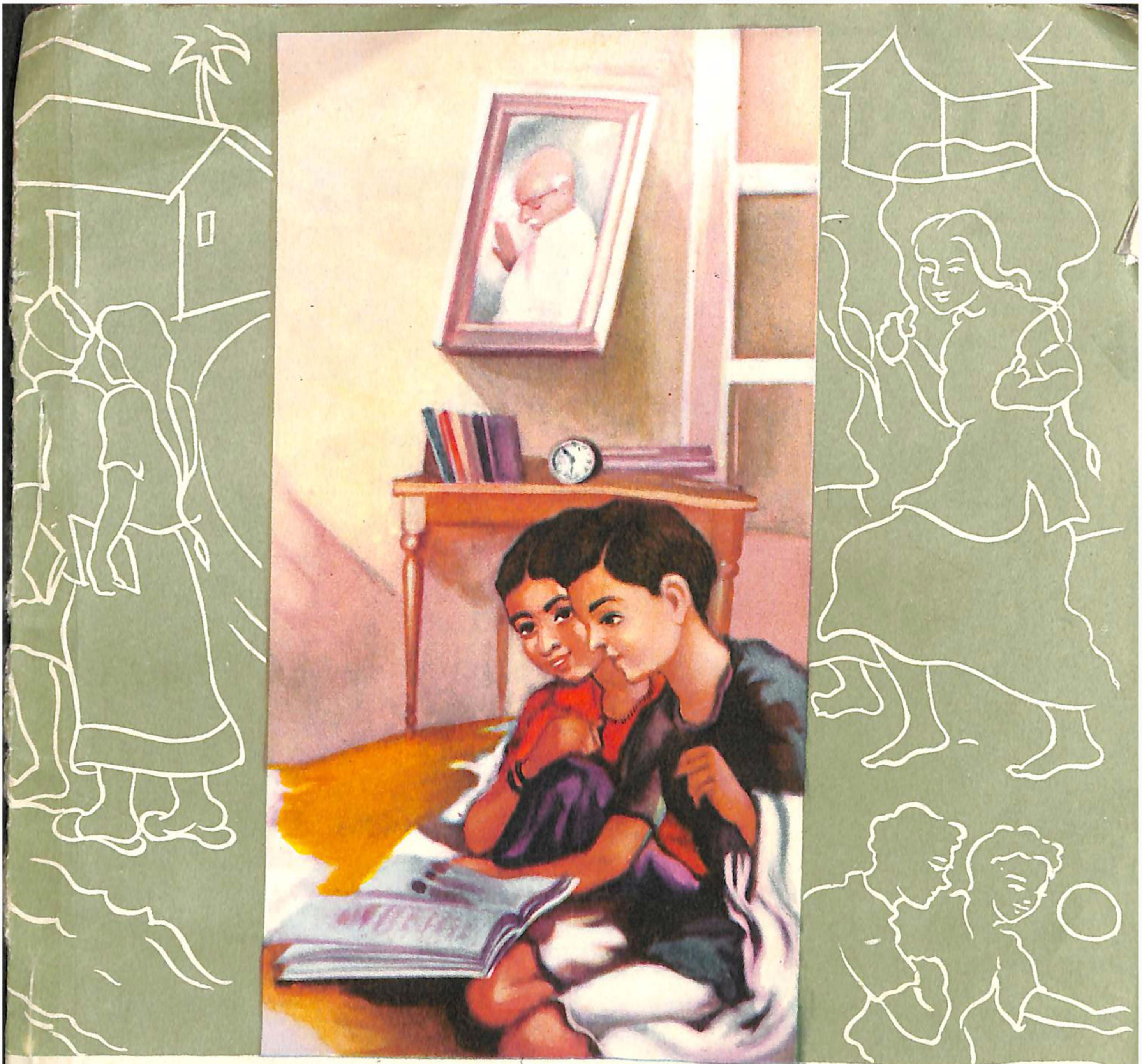

बाल साहित्य माला २

दक्षिण के महापुरुष

H
028.5 P 191 D
028.5
P191D

राजकिशोर पाण्डेय

हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद

दक्षिण के महापुरुष

हिन्दी ... हैदराबाद

... जयन्ती

... में

...शुल्क उपहार

राजकिशोर पाण्डेय

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद

Library IIAS, Shimla
H 028.5 P 191 D
G2143

प्रकाशक :
हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
हैदराबाद (दक्षिण)

●

मुद्रक :
हिन्दी प्रेस
हिन्दी भवन,
नामपल्ली स्टेशन रोड,
हैदराबाद-दक्षिण

●

प्रथम संस्करण २०००—१९५४
द्वितीय संस्करण १०००—१९५८
मूल्य ०=५०

H
028.5
P191 D
G-2143
12-1-98

केन्द्रीय सरकार के आदेश पर हैदराबाद के शिक्षा-विभाग ने बाल-साहित्य के प्रकाशन को प्रोत्साहित करने के लिए एक बाल-साहित्य प्रकाशन समिति बनाई है। समिति ने हिन्दी, तेलुगु, मराठी, कन्नड़ और उर्दू में प्रथम वर्ष आठ-आठ पुस्तकों के प्रकाशन का निश्चय किया और प्रत्येक भाषा के लिए एक समिति बना दी। हिन्दी-सामिति ने आठों पुस्तकें तयार कराईं। लेखक तथा चित्रकार का पुरस्कार हैदराबाद राज्य की ओर से दिया गया। शिक्षा-विभाग ने हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन का काम हिन्दी प्रचार सभा को सौंपा। सभा ने इन पुस्तकों को प्रकाशित किया है। बाल-साहित्य माला की यह पूस्तक पाठकों के सामने है।

स्वामी विद्यारण्य

स्वामी विद्यारण्य का बचपन का नाम माधव था। आज-कल जहाँ विजय नगर के खंडहर हैं, उसके पास ही तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हम्पी नाम का गाँव था। हम्पी तुंगभद्रा नदी के किनारे बसा हुआ था। हम्पी तेरहवीं शताब्दी में एक छोटा-सा गाँव था किन्तु इसका इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन काल में हम्पी पंपा क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध था और हिन्दुओं का एक बड़ा तीर्थ स्थान था। कहा जाता है कि रामायण में जिस पंपापुर का वर्णन है, वह यही है। माधव इसी हम्पी में पदौ हुए। माधव के पिता का नाम पण्डित मायण और माता का नाम श्रीमती था। ये भारद्वाज गोत्र के यजुर्वेदी ब्राह्मण थे।

माधव के दो भाई और थे। ये सबसे बड़े थे। मझले भाई का नाम सायण और सबसे छोटे भाई का नाम भोगनाथ था। ये तीनों भाई बड़े प्रतिभाशाली थे। आगे चल कर ये तीनों भाई अपने समय के बहुत बड़े विद्वान् हुए। सायण ने संस्कृत के बहुत-से ग्रन्थों पर टीकाएँ लिखीं।

माधव के पिता पण्डित मायण थे तो ग़रीब किन्तु संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् थे उन्होंने अपने पुत्रों को संस्कृत की ऊँची शिक्षा दिलाने का निश्चय किया। उन दिनों आजकल की तरह स्कूल-कालेज नहीं थे। विद्यार्थी गुरुओं के घर पर जाते, वहीं रहते और विद्याध्ययन करते। आस-पास के लोगों के दान से विद्यार्थी के खाने-पीने का भी प्रबन्ध हो जाता। इसलिए ग़रीब-से ग़रीब

आदमी भी अपने बच्चों को अधिक-से अधिक शिक्षा दिलवा सकता था।

मायण ने अपने पुत्रों को विष्णु शर्मा नाम के पण्डित के यहाँ विद्याध्ययन करने के लिए भेजा। पण्डित विष्णु शर्मा दक्षिणी भारत के बहुत बड़े विद्वान् थे और कई विषयों के अच्छे ज्ञाता थे। पण्डित माधव ने कुछ ही दिनों में बहुत-से शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर लिया। लोग इनकी विद्वत्ता के कारण इन्हें सर्वज्ञ कहने लगे क्यों कि लोगों का विश्वास था कि पण्डित माधव सभी विषयों के ज्ञाता हैं। इसके बाद माधव गुरु की आज्ञा ले कर अपने छोटे भाई सायण के साथ काञ्जीवरम् गये। वहाँ बहुत-से विद्वानों से सत्संग करके इन लोगों ने अपना ज्ञान बढ़ाया।

पण्डित माधव विद्याध्ययन समाप्त करने के बाद घर आये। उन्होंने गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। इनकी विद्वत्ता की ख्याति सुन कर दूर-दूर से विद्यार्थी इनके यहाँ विद्या पढ़ने के लिए आते थे। माधव और सायण दोनों विद्यार्थियों को पढ़ाते और गृहस्थ का पवित्र जीवन व्यतीत करते थे।

दोनों ने मिल कर मीमांसा, ज्योतिष, व्याकरण वैद्यक आदि शास्त्रों पर कई पुस्तकें लिखीं। इनकी लिखी हुई पुस्तकों में जैमिनीय न्याय-माला-विस्तार, काल-माधवीय, धातु-वृत्ति-योग दीपिका, अनुभूति-प्रकाश, जीवन-मुक्ति-विवेक आदि पुस्तकें बड़े महत्त्व की हैं। ये सभी पुस्तकें संस्कृत में लिखी गई हैं और आज भी बड़े आदर से देखी जाती हैं। इन पुस्तकों के अतिरिक्त इन दोनों भाइयों ने वेदों और उपनिषदों पर टीकाएँ लिखीं, जिनमें वेदों और उपनिषदों के अंशों को समझाने का प्रयत्न किया गया है।

इन पुस्तकों के कारण माधव और सायण की प्रतिष्ठा बढ़ गई। लोग

इन लोगों को आचार्य कहने लगे। पण्डित माधव अपनी विद्वत्ता के कारण लोगों में पण्डित विद्यारण्य के नाम से प्रसिद्ध हुए।

उस समय उत्तर भारत में अलाउद्दीन खिलजी राज्य करता था। उसने अपने एक सेनापति को, जिसका नाम मलिक काफ़ूर था—दक्षिण भारत पर विजय प्राप्त करने के लिए भेजा। उस समय दक्षिण में तीन बड़े राज्य थे। द्वार-समुद्रम में होइसला वंश के राजा राज्य करते थे, देवगिरि यादव वंश के राजाओं की राजधानी थी और वरंगल में काकतीय-वंश का शासन था। इन तीन बड़े राज्यों के अतिरिक्त और भी कई छोटे-छोटे राज्य थे। इन राजाओं ने कभी एक साथ मिल कर मलिक काफ़ूर के हमले का सामना नहीं किया। परिणाम यह हुआ कि एक के बाद दूसरा राज्य मलिक काफ़ूर के कब्जे में चला गया।

मलिक काफ़ूर राज्यों पर हमला करता था। गाँवों और नगरों को लूटता था। चारों ओर आतंक फैला हुआ था। दक्षिण में कोई ऐसी शक्ति न थी, जो इस आपत्ति से लोगों की रक्षा करती। हम्पी के पास ही अनागुन्दी नाम का एक छोटा-सा राज्य था। वहाँ का राजा जम्बुकेश्वर, मलिक काफ़ूर के हमले से इतना डरा कि वह हमले से पहले ही अपने बच्चों और स्त्री के साथ आग में जल कर मर गया।

पण्डित माधव ने अपनी आँखों लोगों की यह दुर्दशा देखी। वे सोचने लगे—लोगों की कैसे रक्षा की जाय।

एक दिन हरिहर और बुक्का नाम के दो भाई माधव के पास आए। ये दोनों भाई बड़े वीर थे। ये दोनों वरंगल के राजा की सेना में नौकर थे।

जब वहाँ का राजा मलिक काफूर से लड़ाई में हार गया तो ये दोनों हम्पी आए और माधव से मिले।

पण्डित माधव ने इन दोनों की राय से अनागुन्दी में एक नया राज्य स्थापित करने का निश्चय किया। राज्य की स्थिति को दृढ़ बनाने के लिए धन और सेना का संग्रह किया जाने लगा। देश की स्वतन्त्रा के इच्छुक नवजवान अनागुन्दी की सेना में भर्ती होने लगे। थोड़े ही समय में एक सुसंगठित सेना तैयार हो गई।

दो साल के बाद अनागुन्दी से राजधानी हम्पी में बदल गई। विद्यारण्य के नाम पर इस नई राजधानी का नाम "विद्यानगर" पड़ा। धीरे-धीरे बहुत-से राज्य इस नये राज्य में मिलने लगे। राज्य की शक्ति बढ़ने लगी। इस राज की शक्ति के कारण उत्तर भारत के आक्रमण-कारी बहुत दिनों तक इस राज्य की ओर आँख न उठा सके। "विद्यानगर" अपनी विजयों के कारण "विजयनगर" कहा जाने लगा।

माधव ने कई वर्षों तक राज्य का संचालन योग्यता से किया। ये सभी धर्म और विचार के लोगों के साथ एक तरह का व्यवहार करते थे। राज्य में सभी धर्मावलम्बियों को अपने धार्मिक कार्यों में पूर्ण स्वतन्त्रता थी। इन्होंने प्रजा की आर्थिक स्थिति सुधारने का प्रयन्त किया। प्रजा सुखी थी। किसी को किसी से भय नहीं था। लोग विजयनगर के राज्य को "राम राज्य" कहने लगे।

विजयनगर की स्थिति दृढ़ हो चुकी थी। प्रजा सुखी थी। न प्रजा में किसी तरह की अशान्ति थी और न बाहरी आक्रमण का भय था। पण्डित

विद्यारण्य ने सोचा कि अब विजयनगर राज्य के सम्बन्ध में उनका कर्त्तव्य पूरा हो चुका है। उन्होंने सन्यास ले लिया। वे मैसूर के श्रृंगेरी नाम के स्थान में गए और वहाँ तपस्या-पूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे।

सन् १३८६ में विद्यारण्य की मृत्यु हो गई।

विद्यारण्य बहुत बड़े विद्वान्, त्यागी तथा न्यायी थे। वे राजनीति के बड़े पण्डित थे और राजनीति की जटिल से जटिल बातों को बहुत जल्द समझ जाते थे। इन्हें स्थापत्य कला से बड़ा प्रेम था। श्रृंगेरी में जो विद्याशंकर नाम का मन्दिर है, उसका निर्माण इन्होंने ही कराया था। यह मन्दिर दक्षिण भारत के कुछ प्रसिद्ध मन्दिरों में से एक है।

प्रताप रुद्रदेव

तेरहवीं शताब्दी में तेलंगाना में काकतीय वंश के राजाओं का राज्य था। इनकी राजधानी वरंगल थी। काकतीय वंश के राजाओं ने सम्पूर्ण आन्ध्र-प्रदेश में अपना राज्य फैलाया और दक्षिण का बहुत-सा भाग अपने राज्य में मिला लिया। इस वंश के राजाओं का राज्य उत्तर में गोदावरी नदी तक, दक्षिण में श्रीशैल तक, पश्चिम में कल्याणी तक, और पूर्व में पूर्वी घाट तक फैला हुआ था। इस वंश के राजा कला और साहित्य के बड़े प्रेमी थे। इनके राज्य में कला और साहित्य की बड़ी उन्नति हुई। प्रतापरुद्र देव इसी वंश के अन्तिम राजा थे।

प्रतापरुद्र देव महारानी रुद्राम्बा की मृत्यु के बाद सन् १२९६ में वरंगल की गद्दी पर बैठे। ये महारानी रुद्राम्बा के नाती थे। रुद्राम्बा को कोई पुत्र न था। उसने अपने जीवन काल में ही अपनी लड़की के लड़के प्रताप रुद्र को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया।

महारानी रुद्राम्बा बड़ी बहादुर थी। वह स्त्री होते हुए भी बहुत अच्छी घुड़ सवारी करती थी और अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण थी। वह प्रतापरुद्र को अपने पुत्र की तरह प्यार करती थी। उसने उनकी शिक्षा का बड़ा सुन्दर प्रबन्ध किया। प्रतापरुद्र थोड़े ही दिनों में अस्त्र-शस्त्र चलाने और घुड़ सवारी में निपुण हो गये। उन्होंने तेलुगु, कन्नड़ और संस्कृत में भी अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली।

महारानी रुद्राम्बा के जीवन के अन्तिम तीन वर्षों में राज्य का अधिकांश काम-काज प्रतापरुद्र देखते थे। उस समय इटली का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो भारत आया था। उसने लिखा है कि महारानी स्त्री होते हुए भी बड़ी योग्यता से राज्य का काम करती हैं। प्रजा सुखी और धन-धान्य से परिपूर्ण है। राज्य में न्याय का प्रबन्ध बहुत उत्तम है।

मार्कोपोलो ने वरंगल राज्य की जो इतनी प्रशंसा की है, उसका श्रेय प्रतापरुद्र को भी है, क्यों कि राज्य का अधिकांश कार्य, उस समय नहीं देखते थे।

प्रतापरुद्र ने इन तीन वर्षों में अपने को एक अच्छे सैनिक के रूप में सिद्ध किया। उन्होंने राज्य में होने वाले बहुत से विद्रोहों को दबाया और नये प्रान्तों पर अधिकार करके राज्य की सीमा बढ़ाई।

सन् १२९६ में महारानी रुद्राम्बा की मृत्यु हो गई प्रतापरुद्र गद्दी पर बैठे। इनके शासन के प्रथम ६ वर्षों में राज्य में पूर्ण शान्ति थी। इन वर्षों में उन्होंने राज्य की स्थिति को दृढ़ करने एवं प्रजा की दशा सुधारने का बड़ा प्रयत्न किया किन्तु बाद के वर्षों में इन्हें बहुत से बाहरी आक्रमणों का सामना करना पड़ा और इनका अधिकांश समय लड़ाइयों में बीता।

उस समय दिल्ली में अलाउद्दीन खिलजी नाम का बादशाह राज्य करता था। वह दक्षिण के राज्यों को जीत कर अपने राज्य में मिलाना चाहता था। सन् १३०३ में उसने मलिक छज्जू को एक बहुत बड़ी सेना के साथ वरंगल पर आक्रमण करने के लिए भेजा। प्रतापरुद्र ने बड़ी बहादुरी के साथ आक्रमणकारियों का सामना किया। बहुत से मुसलमान सैनिक मारे गए। अन्त में

मलिक छज्जू बहुत बड़ी हानि उठा कर दिल्ली लौट गया।

६ वर्षों के बाद अलाउद्दीन ने मलिक काफूर को एक बड़ी सेना के साथ फिर तेलंगाने पर आक्रमण करने के लिए भेजा। सेना बहुत-सी नदियों, पहाड़ों और जंगलों को पार करती हुई, देवगिरि के पास पहुँची। वहाँ मलिक काफूर ने आक्रमण की पूरी योजना बनाई। सेना दो दिन तक वहाँ विश्राम करने के बाद आगे बढ़ी। बहुत से गावों को लूटते-पाटते, सैनिक लोग कई दिनों के बाद वरंगल पहुँचे।

अमीर खुसरो ने लिखा है कि वरंगल दुर्ग की दीवारें मिट्टी की बनी हुई थीं और इतनी मजबूत थीं कि भाले और दूसरे हथियारों का उन पर कोई प्रभाव न पड़ता था। किले के चारों ओर १२५४२ गज लंबी दीवार के बाहर एक गहरी खाई थी।

मलिक काफूर की सेना ने किले के चारों ओर घेरा डाल दिया। एक दिन रात को कुछ सैनिक रस्सियों के सहारे दीवारों पर चढ़ गए। बाहर की दीवार के एक बड़े भाग पर आक्रमणकारियों का अधिकार हो गया, किन्तु उन्हें मालूम हुआ कि किले पर अधिकार करना कठिन काम है। बाहर की दीवार के भीतर एक और गहरी खाई थी और उसके बाद एक ऊँची दीवार। दीवार के पीछे दुर्ग का प्रधान भाग था।

आक्रमणकारियों के सामने जीवन-मरण का प्रश्न था। प्रतापरुद्र की सेना किले के भीतर से गहरी मार कर रही थी। उन्होंने बड़ी हिम्मत से काम लिया। शत्रु के सिपाही खाइयों में कूद पड़े और उसे तैर कर पार किया। उसके बाद वे भीतर की दीवारों पर चढ़ने लगे।

प्रतापरुद्र की सेना ने बड़ी बहादुरी के साथ आक्रमणकारियों का सामना किया, किन्तु उस समय प्रतापरुद्र की अधिकांश सेना राज्य के विभिन्न भागों में विद्रोह दबाने में लगी हुई थी। किले में थोड़ी सेना थी। उतनी सेना से मुसलमानों की विशाल सेना का सामना करना कठिन था।

जब प्रतापरुद्र ने देखा कि अब अधिक समय तक मुकाबिला नहा किया जा सकता—तो उन्होंने मलिक काफूर के पास सन्धि का प्रस्ताव भेजा। प्रतापरुद्र ने मलिक काफूर को ३०० हाथी, ७००० घोड़े और बहुत-से जवाहिरात दिये। युद्ध बन्द हो गया। मलिक काफूर १००० ऊँटों पर दक्षिण-भारत के राज्यों में लूटे हुए माल, बहुत-से हाथी और घोड़ों को ले कर सन् १३१० के मार्च महीने में दिल्ली लौट गया। कहा जाता है कि मलिक काफूर ने ३१२ हाथी, २०,००० मन सोना और मोती एवं जवाहिरातों से भरे कई सन्दूक बादशाह को भेंट किये।

सन् १३२१ में दिल्ली का बादशाह गयासुद्दीन तुगलक था। उसने अपने बड़े बेटे को फिर वरंगल पर आक्रमण करने के लिए भेजा। आक्रमण का कारण यह था कि प्रतापरुद्र ने गयासुद्दीन को जजिया देना बन्द कर दिया था। उलगखाँ ने एक बड़ी फौज ले कर वरंगल पर हमला किया। प्रतापरुद्र ने बड़ी बहादुरी के साथ उसका सामना किया। उलगखाँ के बहुत-से सैनिक मारे गये और वह हार कर दिल्ली लौट गया।

दो महीने बाद एक बड़ी सेना ले कर उलगखाँ ने फिर वरंगल पर आक्रमण किया। इस बार भी प्रतापरुद्र ने आक्रमण का सामना पूरी शक्ति के साथ किया। प्रयत्न करने पर भी ६ मास तक आक्रमणकारी वरंगल पर

अधिकार न कर सके, किन्तु अन्त में प्रतापरुद्र की सेना दिल्ली की विशाल सेना का सामना न कर सकी। प्रतापरुद्र अपने परिवार के अन्य लोगों के साथ बन्दी बना। जब वे दिल्ली ले जाए जा रहे थे, रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गई।

प्रतापरुद्र काकतीय वंश के सबसे प्रसिद्ध राजा थे। उनके जीवन का अधिकांश समय लड़ाइयों में बीता। अपनी वीरता और युद्ध कौशल के बल से उन्होंने दिल्ली के बादशाहों की बड़ी से बड़ी सेना को कई बार हराया। वे साहित्य और कला के प्रेमी थे। उनके दरबार में विद्वान् और पण्डितों का बड़ा सम्मान होता था। उनके दरबार में विद्यानाथ, मल्लिकार्जुन, नृसिंह और विश्वनाथ आदि बहुत से पण्डित और कवि रहा करते थे। विश्वनाथ ने "प्रतापरुद्रीय यशो भूषण" नाम से संस्कृत में एक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक काव्य-शास्त्र पर लिखी गई है।

प्रतापरुद्रदेव स्वयं भी तेलुगु, कन्नड़ और संस्कृत के बहुत बड़े पण्डित थे। लोग उनकी विद्वत्ता के कारण उन्हें "विद्या-भूषण" कहा करते थे। उन्होंने तेलुगु में "नीति-सार" नाम की एक पुस्तक लिखी, जो अब भी उपलब्ध है।

ख्वाजा गेसूदराज

ख़्वाजा गेसूदराज का बचपन का नाम सैयद मुहम्मद था। इनके पिता शाह राजू कत्ताल दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तुगलक के सरदारों में से थे। मुहम्मद तुगलक दिल्ली के स्थान पर दौलताबाद को अपनी राजधानी बनाना चाहता था, उन दिनों दिल्ली पर मुगल लोग लगातार आक्रमण कर रहे थे। मुहम्मद तुगलक ने सोचा दक्षिण में राजधानी बना कर वह इन हमलों से बच सकेगा। उसने दिल्ली के लोगों और अपने सरदारों को दौलताबाद जाने की आज्ञा दी। शाह राजू कत्ताल अपने परिवार के लोगों के साथ दौलताबाद आए। जिस समय वे दौलताबाद आए, सैयद मुहम्मद की अवस्था केवल चार वर्ष की थी।

सैयद मुहम्मद बचपन से ही बड़े बुद्धिमान् और प्रतिभाशाली थे। ये माता-पिता की आज्ञा का पालन करते और सर्वदा उन्हें प्रसन्न रखने का प्रयत्न करते। इनकी स्मरण शक्ति बड़ी तेज थी। इन्हें कोई भी बात जल्द याद हो जाती। धार्मिक बातों की ओर इनकी रुचि अधिक थी। जब कभी ये अपने पिता को नमाज पढ़ते देखते; उनके पास जा कर खड़े हो जाते और स्वयं भी नमाज पढ़ने का यत्न करते। ये अपनी माता से महात्माओं और फकीरों का जीवन चरित्र सुनते और उन्हीं जैसा अपने को बनाने की कोशिश करते।

एक दिन सैयद मुहम्मद अपने पिता के साथ शेख़ के यहाँ गए। शेख़

दौलताबाद में एक बड़े धार्मिक व्यक्ति थे। लोग उनका बड़ा आदर करते थे। शेख़ ने सैयद मुहम्मद को देखते ही समझ लिया कि आगे चल कर यह लड़का बड़ा आदमी होगा। उन्हें सैयद मुहम्मद में बड़प्पन के लक्षण दिखलाई पड़े। उन्होंने कहा :—

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात"

उस दिन से सैयद मुहम्मद के पिता उनकी पढ़ाई लिखाई पर बड़ा ध्यान देने लगे।

जब सैयद मुहम्मद ११ साल के थे तो उनके पिता की मृत्यु हो गई। पिता के मरने के चार साल बाद वे अपनी माता के साथ दिल्ली चले आए। उन दिनों दिल्ली में नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी नाम के एक बड़े फ़क़ीर थे। सैयद मुहम्मद लोगों से उनके बारे में बहुत कुछ सुना करते थे और इच्छा थी कि वे उन्हीं के शिष्य हो जाएँ।

एक दिन सैयद मुहम्मद एक मसजिद में नमाज पढ़ने गए। वहाँ और भी बहुत-से लोग नमाज पढ़ रहे थे। नमाज पढ़ने के बाद सैयद मुहम्मद का ध्यान एक बूढ़े व्यक्ति की ओर गया, जिसके मुख-मण्डल से प्रतिभा और शान्ति टपक रही थी। उन्होंने सोचा—क्या वे नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी तो नहीं हैं; जिनको वे अपना गुरु बनाना चाहते हैं। लोगों से पूछने पर उनकी बात सच निकली।

सैयद मुहम्मद मसजिद में ही चिराग़ देहलवी के पास गए और उनसे शिष्य बनाने की प्रार्थना की। चिराग़ देहलवी ने १५ साल के इस लड़के की नम्रता और लगन को देखा और उसे अपना शिष्य बना लिया।

सैयद मुहम्मद ने बड़े परिश्रम से पढ़ना प्रारम्भ किया। इन्होंने अपने गुरु की बड़ी सेवा की। जब कुछ रात बाकी रहती, तभी वे उठते; अपने गुरु को हाथ मुँह धुलाते और उसके बाद स्वयं नित्य-क्रिया से निवृत्त हो कर सवेरे की नमाज अपने गुरु के साथ पढ़ते। नमाज पढ़ने के बाद जब इनके गुरु खुदा के ध्यान में बैठते; तो ये अपने गुरु के दूसरे शिष्यों को पढ़ाते। इनके गुरु इन पर बड़े प्रसन्न थे। एक दिन उन्होंने इनके परिश्रम को देख कर कहा—"इस लड़के ने ७० साल पहले की बातें मुझे याद दिला दीं—यह मेरे बाद मेरे काम को पूरा करेगा।"

१९ वर्ष की अवस्था में सैयद मुहम्मद ने अरबी, फ़ारसी और इस्लाम धर्म के सम्बन्ध में पूरी योग्यता प्राप्त कर ली।

४० वर्ष की अवस्था में इन्होंने विवाह किया। इन्हें दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ हुईं। इन्होंने अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई की अच्छी व्यवस्था की। ये अपना अधिक समय पूजा-पाठ और दीन दुखियों की सेवा में लगाते। ये बड़े दानी थे। जो कोई कुछ माँगता, उसे पूरा करने का प्रयत्न करते। इनक इस स्वभाव के कारण लोग इन्हें "बन्दा-नवाज" कह कर पुकारते थे। कुछ दिनों के बाद लोग इनके सैयद मुहम्मद नाम को भूलने लगे और ये "ख्वाजा बन्दा नवाज" के नाम से प्रसिद्ध हो गये। कुछ लोग इन्हें "गेसूदराज" कह कर पुकारते क्योंकि इनके बाल काफ़ी लम्बे थे। फ़ारसी में "गेसूदराज" का मतलब है—लम्बे बाल वाला।

ख़्वाजा गेसूदराज की अवस्था ५८ वर्ष की हो चुकी थी। उन्होंने भविष्य-वाणी की कि दिल्ली पर कोई बड़ी विपत्ति आनेवाली है। दिल्ली के बहुत

से लोग शहर छोड़ कर इधर उधर जाने लगे। ख़्वाजा गेसूदराज भी अपने परिवार के साथ बिहार की ओर चल पड़े और वहाँ से ग्वालियर होते हुए दौलताबाद आये। उस समय ये भारतवर्ष में पूर्ण रूप से प्रसिद्ध हो चुके थे। रास्ते में हज़ारों आदमी इनके दर्शन करते और उपदेश सुनते थे।

ख्वाजा गेसूदराज की भविष्य-वाणी सत्य हुई। थोड़े ही दिनों के बाद समरकन्द के बादशाह तैमूर लंग ने दिल्ली पर आक्रमण किया। उसने और उसके सिपाहियों ने दिल्ली में इतनी लूट-मार की कि दिल्ली की दशा शोचनीय हो गई।

उन दिनों गुलबर्गा में फीरोज़शाह बहमनी राज्य करता था। उसने सुना कि ख्वाजा गेसूदराज एक पहुँचे हुए फकीर हैं। उसने ख्वाजासाहब को गुलबर्गा आने के लिए निमन्त्रित किया। बादशाह ने उनका बड़ा सम्मान किया। उसने ख्वाजासाहब से गुलबर्गा में ही रहने की प्रार्थना की। उसका छोटा भाई अहमदखाँ ख्वाजासाहब का शिष्य हो गया।

एक दिन फीरोजशाह ख्वाजासाहब के पास गया। उसने कहा कि वह अपने बड़े लड़के को युवराज बनाना चाहता है; ख्वाजा साहब उसे आशीर्वाद दें। ख्वाजासाहब ने कहा—"तुम्हारे बाद गुलबर्गा की गद्दी पर तुम्हारा छोटा भाई अहमदखाँ बैठेगा। तुम्हें अपने पुत्र को युवराज बनाने की आवश्यकता नहीं है।" बादशाह ख्वाजासाहब की इस बात से बड़ा नाराज हुआ। उसने ख़्वाजासाहब को शहर से बाहर निकल जाने की आज्ञा दी।

ख़्वाजासाहब शहर के बाहर रहने लगे। उधर फीरोजशाह अहमदखाँ को मरवा डालने का षड्यन्त्र रचने लगा। अहमदखाँ ख्वाजासाहब के पास

गया। उसने कहा कि वह अपने जीवन से ऊब चुका है और फकीर हो जाना चाहता है। ख्वाजा साहब ने अहमदखाँ से कहा—"डरो मत। फकीर होना भी ठीक नहीं। फकीर से वह बादशाह अच्छा है जो ईश्वर-भक्ति के साथ संसार के लोगों की सेवा करता है और न्यायपूर्वक शासन करता है।"

अहमदखाँ के ऊपर ख्वाजासाहब की इन बातों का बड़ा प्रभाव पड़ा। वह अपने साथियों के साथ गुलबर्गा छोड़ कर निकल पड़ा और लड़ाई की तैयारी करने लगा। फीरोजशाह लड़ाई में हारा और अहमदखाँ, अहमदशाह के नाम से गुलबर्गा की गद्दी पर बैठा।

गद्दी पर बैठने के दूसरे दिन अहमदशाह ख्वाजासाहब के पास गया। उसने ख्वाजासाहब से उपदेश देने की प्रार्थना की। ख्वाजासाहब ने कहा:—

(१) राजा को सादा जीवन बिताना चाहिए और स्वयं राज्य के कामों की देख-भाल करनी चाहिए।

(२) राजा को राज्य के विद्वान् और पढ़े-लिखे ईमानदार लोगों से राज्य के काम में सहायता लेनी चाहिए।

(३) राजा को ऐसे कर्मचारियों की नियुक्ति करनी चाहिए जो घूस न लें और ईमानदार हों। गुप्तचरों के द्वारा इन कर्मचारियों के कार्यों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

(४) बादशाह को चाहिए कि वह प्रजा के साथ अच्छा बर्ताव करे। उसे सुखी बनाने का प्रयत्न करे और न्याय के लिए अच्छे न्यायाधीश रखे।

(५) राज्य में शराब और अन्य नशे की चीज़ों के सेवन पर रोक लगानी चाहिए।

(६) राजा को चाहिए कि वह दिन का समय राज्य के कामों में और रात का समय ईश्वर की प्रार्थना में लगावें।

(७) राजा खजाने के धन को अपना न समझे बल्कि प्रजा का समझे और उसमें से कम से कम अपने लिए खर्च करें।

अहमदशाह पर ख्वाजा साहब के इन उपदेशों का बड़ा प्रभाव पड़ा। इतिहासकारों ने उसकी बड़ी प्रशंसा की है। वह सादा भोजन करता, सादे कपड़े पहनता और एक सादे मकान में रहता था। वह खजाने का पैसा अपने कामों के लिए खर्च नहीं करता था। वह कुरान की कापियाँ करता और उससे जो पैसा मिलता; उसीसे अपनी गुजर करता। वह सप्ताह में तीन दिन कुछ समय विद्यार्थियों को पढ़ाने में लगाता। रात को वेश बदल कर प्रजा की दशा जानने का प्रयत्न करता और हिन्दू मुसलमान सब के साथ एक तरह का व्यवहार करता।

अहमदशाह के गद्दी पर बैठने के थोड़े ही दिनों के बाद ख्वाजासाहब की मृत्यु हो गई। उस समय उनकी अवस्था १०४ वर्ष की थी। अहमदशाह ने ख्वाजासाहब के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए इनकी एक बड़ी शानदार समाधि बनवाई और इसके खर्च के लिए एक जागीर दे दी। गुलबर्गा में अब भी वह समाधि मौजूद है; जहाँ प्रतिवर्ष ख्वाजासाहब की मृत्यु तिथि के दिन मेला लगता है।

ख्वाजा गेसूदराज केवल फ़कीर ही नहीं थे किन्तु बहुत बड़े विद्वान् भी थे। इन्होंने अनेक विषयों पर कुल मिला कर १०५ पुस्तकें लिखीं। उनमें कुछ आज भी उपलब्ध हैं। इन्हें संगीत और कविता सुनने में बड़ा आनन्द

आता था। ये कवियों से हिन्दी और फ़ारसी की कविताएँ सुनते और कव्वालों से कव्वाली।

इनके शिष्यों की संख्या बहुत अधिक थी। अपने शिष्यों से ये सर्वदा कहा करते थे कि—आज का काम कल पर मत छोड़ो और आपत्ति में मत घबराओ। ये इस्लाम धर्म के नियमों का पालन बड़ी कट्टरता से करते थे किन्तु अन्य धर्मवालों के प्रति इन्हें कोई घृणा न थी। ये सभी धर्मों को श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे।

वामन रामचन्द्र नाईक

हैदराबाद के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में वामन रामचन्द्र नाईक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये अपनी सेवाओं के कारण हैदराबाद राज्य में ही नहीं अपितु सारे देश में प्रसिद्ध थे। इनके समय में हैदराबाद की जो सामाजिक और राजनीतिक उन्नति हुई, उसमें इनका बहुत बड़ा हाथ था। उस समय जनता की दशा सुधारने के लिए जो संस्थाएँ स्थापित हुईं उन सभी संस्थाओं में इनका सहयोग था।

वामन नाईक का जन्म २ अप्रैल १८७८ को वनपर्ती के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पूर्व भी इस परिवार में बहुत से ऐसे व्यक्ति पैदा हुए, जिन के कारण यह परिवार राज्य में प्रसिद्ध था। वामन नाईक के पितामह गोविन्द नाईक वनपर्ती के दीवान थे। गोविन्द नाईक के भाई वेंकोबा नाईक बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। ये हैदराबाद राज्य में चुंगी विभाग में एक बड़े अफसर थे और इस विभाग को संगठित करने में इनका बड़ा हाथ था।

गोविन्द नाईक और वेंकोबा नाईक अपनी उदारता के लिए प्रसिद्ध थे। गोविन्द नाईक ने बहुत-सी धर्मशालाएँ और मन्दिर बनवाये। सन् १८७७ में

देश में बहुत बड़ा अकाल पड़ा। हजारों आदमी भूख से मरने लगे। इसका प्रभाव हैदराबाद पर भी पड़ा। उस विपत्ति में जब लोग अपने परिवार के भरण-पोषण में लगे थे, वेंकोबा नाईक ने अपनी अधिकांश संपत्ति अकाल-पीड़ितों की सेवा में लगा दी।

इस घटना के पाँच ही वर्ष बाद वेंकोबा नाईक की मृत्यु हो गई। वामन नाईक के पिता श्री रामचन्द्र नाईक भी वेंकोबा नाईक की मृत्यु के दो ही मास बाद स्वर्ग-लोक सिधारे। वामन नाईक की अवस्था उस समय केवल चार वर्ष की थी। परिवार को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ रहा था। वे दिन इस परिवार के लिए बड़ी कठिनाई के थे।

वामन नाईक बड़े बुद्धिमान् और परिश्रमी थे। इन्होंने थोड़े ही दिनों में अंग्रेजी, तेलुगु, उर्दू और मराठी में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। परिवार के कई लोग ऊँचे पदों पर रह चुके थे। इनका परिवार अपनी सेवाओं के कारण राज्य में काफी प्रसिद्ध था। वामन नाईक बड़ी आसानी से कोई ऊँची नौकरी पा सकते थे। उन दिनों नौकरी में धन और सम्मान दोनों प्राप्त होता था। किन्तु वामन नाईक स्वतन्त्र स्वभाव के थे। इनका झुकाव सार्वजनिक कार्यों की ओर था। किसी पद पर रह कर जनता की सेवा करना कठिन था। इन्होंने नौकरी न करने का निश्चय किया।

किन्तु परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न थी। परिवार के भरण-पोषण के लिए धन की आवश्यकता थी। इन्होंने बहुत से धन्धे प्रारम्भ किये। ये दिन-रात काम में लगे रहते। परिश्रमी होने के कारण इन्हें हर जगह काफी लाभ हुआ।

किन्तु वामन नाईक के जीवन का लक्ष्य केवल धन कमाना नहीं था। अपने घर के काम-धन्धे देखते हुए इन्होंने अपना अधिक समय सार्वजनिक कार्यों के लिए दिया। सन् १९१८ में जब देश में भयंकर प्लेग और इनफ़्लुएंजा की बीमारी फैली, तो इन्होंने लोगों की बड़ी सेवा की। ये लोगों के घरों में जाते और स्वयं उन्हें दवाई बाँटते। ये अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के कई वर्षों तक सदस्य रहे। हैदराबाद में उस समय जो काँग्रेस और खादी प्रसार का काम चल रहा था, उसमें इनका बहुत बड़ा हाथ था।

श्री नाईक कट्टर सनातनी थे। ये कई वर्षों तक हैदराबाद राज्य सनातन धम सभा के अध्यक्ष रहे, किन्तु ये रूढ़िवादी नहीं थे। इनका कहना था कि हिन्दू-धर्म सर्वदा उदार रहा है। आज भी हमें बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालने का प्रयत्न करना चाहिए। ये अपने धार्मिक विचारों में बड़े दृढ़ थे; किन्तु कभी इनके मन में दूसरे धर्म वालों के लिए द्वेष या घृणा का भाव न था। इन्होंने अछूतों की दशा सुधारने का बड़ा प्रयत्न किया।

वामन नाईक का स्वस्थ और सुन्दर शरीर, प्रभावपूर्ण मुख-मण्डल लोगों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता था। ये बड़े निर्भीक और स्पष्ट-वक्ता थे। चाहे किसी को अच्छा लगे या न लगे, उचित बात कहने में ये किसी प्रकार का संकोच न करते थे। ये एक अच्छा वक्ता थे। मराठी, अँग्रेज़ी, उर्दू और तेलुगु में बहुत सुन्दर भाषण दे सकते थे। सभाओं में लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने की एक अद्भुत शक्ति इनमें विद्यमान थी।

वामन नाईक बड़े उदार स्वभाव के थे। इनकी जागीर में जो किसान थे, उनके दुःख सुख का बड़ा ध्यान रखते थे। एक बार ये अपनी जागीर में

किसानों की दशा देखने गये। किसान आवश्यकता पड़ने पर इनके यहाँ से कर्ज़ भी लिया करते थे। इन्हें मालूम हुआ कि कुछ किसानों के ऊपर जितना ऋण है, उससे अधिक का काग़ज़ लिखा लिया गया है। इन्होंने वे काग़ज़ किसानों के सामने ही फाड़ दिए और किसानों को लगभग १७००० रुपये के कर्ज़ से मुक्त कर दिया।

वामन नाईक अतिथियों का बड़ा सम्मान करते थे। इनका बेगमपेठ का विशाल भवन सर्वदा अतिथियों के लिए खुला रहता था। देश के विभिन्न प्रान्तों से विभिन्न संस्थाओं के प्रचारक आते और इनके यहाँ सम्मान पाते थे।

G-2143

किन्तु वामन नाईक के जीवन का लक्ष्य केवल धन कमाना नहीं था। अपने घर के काम-धन्धे देखते हुए इन्होंने अपना अधिक समय सार्वजनिक कार्यों के लिए दिया। सन् १९१८ में जब देश में भयंकर प्लेग और इनफ़्लुएंजा की बीमारी फैली, तो इन्होंने लोगों की बड़ी सेवा की। ये लोगों के घरों में जाते और स्वयं उन्हें दवाई बाँटते। ये अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के कई वर्षों तक सदस्य रहे। हैदराबाद में उस समय जो काँग्रेस और खादी प्रसार का काम चल रहा था, उसमें इनका बहुत बड़ा हाथ था।

श्री नाईक कट्टर सनातनी थे। ये कई वर्षों तक हैदराबाद राज्य सनातन धम सभा के अध्यक्ष रहे, किन्तु ये रूढ़िवादी नहीं थे। इनका कहना था कि हिन्दू-धर्म सर्वदा उदार रहा है। आज भी हमें बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालने का प्रयत्न करना चाहिए। ये अपने धार्मिक विचारों में बड़े दृढ़ थे; किन्तु कभी इनके मन में दूसरे धर्म वालों के लिए द्वेष या घृणा का भाव न था। इन्होंने अछूतों की दशा सुधारने का बड़ा प्रयत्न किया।

वामन नाईक का स्वस्थ और सुन्दर शरीर, प्रभावपूर्ण मुख-मण्डल लोगों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता था। ये बड़े निर्भीक और स्पष्ट-वक्ता थे। चाहे किसी को अच्छा लगे या न लगे, उचित बात कहने में ये किसी प्रकार का संकोच न करते थे। ये एक अच्छा वक्ता थे। मराठी, अँग्रेज़ी, उर्दू और तेलुगु में बहुत सुन्दर भाषण दे सकते थे। सभाओं में लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने की एक अद्भुत शक्ति इनमें विद्यमान थी।

वामन नाईक बड़े उदार स्वभाव के थे। इनकी जागीर में जो किसान थे, उनके दुःख सुख का बड़ा ध्यान रखते थे। एक बार ये अपनी जागीर में

किसानों की दशा देखने गये। किसान आवश्यकता पड़ने पर इनके यहाँ से कर्ज़ भी लिया करते थे। इन्हें मालूम हुआ कि कुछ किसानों के ऊपर जितना ऋण है, उससे अधिक का काग़ज़ लिखा लिया गया है। इन्होंने वे काग़ज़ किसानों के सामने ही फाड़ दिए और किसानों को लगभग १७००० रुपये के कर्ज़ से मुक्त कर दिया।

वामन नाईक अतिथियों का बड़ा सम्मान करते थे। इनका बेगमपेठ का विशाल भवन सर्वदा अतिथियों के लिए खुला रहता था। देश के विभिन्न प्रान्तों से विभिन्न संस्थाओं के प्रचारक आते और इनके यहाँ सम्मान पाते थे।

G-2143

स्वर्गीय केशवराव

केशवराव जी परभणी जिले के कोरट गाँव में सन् १८६७ में पैदा हुए। इस गाँव के कारण ही आपका परिवार हैदराबाद में कोरटकर कहलाता है। कोरट रेलवे स्टेशन से दूर एक छोटा-सा गाँव है। उस समय इस गाँव में न कोई पाठशाला थी और न पढ़ने का और कोई साधन। केशवराव जी के माता पिता ग़रीब थे। न वे उन्हें बाहर पढ़ने के लिए भेज सकते थे और न घर पर अध्यापक रख कर पढ़ा सकते थे इनक पिता श्री संतुकराव तीन रुपये मासिक वेतन पर गाँव के किसी सेठ के यहाँ पूजा करते थे। इनके भाई पास के ही किसी गाँव में नौकर थे।

ऐसी स्थिति में इनके घरवाले काग़ज़-पेंसिल का भी ख़र्च बरदाश्त नहीं कर सकते थे, किन्तु केशवरावजी का मन पढ़ने में लगा था। ये अपने पिता के साथ सेठ के यहाँ कभी कभी पूजा कराने जाते। वहाँ यदि कभी पैसे मिलते तो उससे कागज़-पेंसिल ख़रीद लेते। उन दिनों किताबें बड़ी महँगी मिलती थीं। बालक केशव के लिए उन किताबों का ख़रीदना बड़ा कठिन था। ये दूसरे लड़कों से किताबें माँग लाते और उन्हें नक़ल करके पढ़ते। थोड़े ही

दिनों में इन्होंने उर्दू पढ़ना-लिखना सीख लिया। नागरी और मोड़ी के लिखने का अभ्यास कर लिया। इनकी लिखावट बड़ी अच्छी थी।

केशवराव जी १५ साल के हो चुके थे। ये १५) मासिक वेतन पर गुलबर्गा तहसील में नौकर हो गए। ये वहाँ अपना काम जी लगा कर करते। इनके कामों से तहसीलदार प्रसन्न था। उसने इनको तरक्की दे कर एकाउन्टेन्ट बना दिया। वह ज़माना दूसरा था। एकाउन्टेन्ट को वेतन के अतिरिक्त ५०—६० रुपये बाहर से बड़ी आसानी से मिल जाते थे, किन्तु केशवराव जी ने बड़ी ईमानदारी से अपना काम किया। ये कभी किसी से एक पैसा नहीं लेते थे।

एक दिन तहसीलदार ने कहा—"केशव, यदि तुम लोगों से पैसा नहीं लेते, तो इतने कम वेतन में तुम्हारा काम कैसे चलेगा और तुम अपने परिवार के लोगों का पोषण कैसे करोगे।"

केशवराव जी ने कोई उत्तर न दिया। वे अपना काम और अधिक ईमानदारी से करने लगे। कुछ दिनों के बाद वे सदर अदालत में मुहर्रिर हो गए।

केशवराव जी नौकरी करना नहीं चाहते थे। वे महत्त्वाकांक्षी थे। वे इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि नौकरी करते हुए उन्नति नहीं की जा सकती। उनका ध्यान वकालत की ओर गया। वे दिन भर मुंशीगिरी करते और रात को क़ानून की किताबें पढ़ते। उनकी स्मरण-शक्ति बड़ी तेज़ थी। जो पढ़ते, वही याद हो जाता। उन्होंने वकालत की परीक्षा दी और पास हो गए। बाईस साल उम्र में केशवराव जी मुंशी से वकील हो गए। उन्होंने गुलबर्गा में ही वकालत शुरू कर दी।

केशवराव जी अपना काम बड़ी मेहनत से करते। जो मुकदमा इनके पास आता, उसे पूरी तरह समझने की कोशिश करते। ये झूठे मुकदमें अपने हाथ में नहीं लेते थे और सच्चे मुकदमों को जी-जान से जिताने की कोशिश करते। अपने परिश्रम के कारण ये इस व्यवसाय में भी उन्नति करने लगे। दूर-दूर से मुकदमें इनके पास आने लगे और इनकी प्रसिद्धि चारों ओर फैल गई। मुकदमों में परिश्रम करने के साथ इन्होंने अपना अध्ययन भी जारी रखा। उस समय क़ानून की अधिक पुस्तकें अंग्रेज़ी में थीं। इन्होंने अंग्रेज़ी सीखनी शुरू की। ये अन्य विषयों की पुस्तकों का अध्ययन भी करते और पत्रों में लेख भी लिखते।

कुछ दिन बाद केशवराव जी हैदराबाद आ गये। ये हाई-कोर्ट में वकालत करने लगे। उनकी गिनती हैदराबाद के बड़े लोगों में होने लगी। बड़े-बड़े मुकदमें उनके पास आने लगे। उनकी आय चार-पाँच हज़ार रुपये महीने तक पहुँच गई।

अपने परिश्रम और योग्यता के कारण केशवराव जी बराबर उन्नति करते गये। यहाँ तक कि वे हाईकोर्ट के जज बनाये गये किन्तु इतना होने पर भी उनमें कभी अभिमान पैदा नहीं हुआ। वे सभी लोगों के साथ नम्र व्यवहार करते। उन्होंने अपने पिछले साथियों को कभी नहीं भुलाया। छोटे से छोटा आदमी भी उनके पास जा सकता था।

आज हैदराबाद के इतिहास में केशवराव जी का नाम केवल इसीलिए अमर नहीं है कि वे एक अच्छे जज या वकील थे, किन्तु इसलिए भी अमर है कि उन्होंने जनता की बड़ी सेवा की। उन्होंने लोगों की भलाई के लिए

बहुत सी संस्थाओं की स्थापना की और जीवन भर उनका संचालन करते रहे। उन दिनों हिन्दू समाज में बहुत से दोष थे, जिनके कारण समाज की जड़ें खोखली होती जा रही थीं। लोगों में छुआ-छूत का भाव अधिक था। बाल-विवाह की प्रथा थी। केशवराव जी ने इन कुरीतियों को दूर करने के लिए बड़ा प्रयत्न किया। इसके लिए उन्हें बड़े कष्ट भी सहने पड़े।

छुआ-छूत का भाव मिटाने के लिए सन् १९११ में पूना में एक सहभोज का आयोजन किया गया। केशवराव जी के परिवार वाले इसके विरुद्ध थे, किन्तु उन्होंने विरोध की परवाह नहीं की। उन्होंने उस सहभोज में भाग लिया। घरवाले इनसे बहुत अप्रसन्न हुए। घर का कोई व्यक्ति न इनका छुआ हुआ पानी पीता, न खाना खाता। इनको अलग बैठा कर खाना खिलाया जाता। किन्तु आपने इसकी कोई परवाह न की। वे जीवन भर लोगों में छुआ-छूत का भाव मिटाने का प्रयत्न करते रहे।

सन् १९१८ में देश में बड़े जोरों से इन्फ्लुएंजा और प्लेग की बीमारी फैली। इसका प्रभाव हैदराबाद पर भी पड़ा। हज़ारों आदमी बीमारी से मरने लगे। केशवराव जी ने लोगों की सेवा करने के लिए एक संगठन बनाया। वे लोगों के घरों में जाते; उनकी हालत देखते और दवाएँ बाँटते।

उस समय हैदराबाद की कोई ऐसी सार्वजनिक संस्था न थी, जिसे उन्होंने किसी न किसी प्रकार की सहायता न दी हो। उन्होंने शिक्षा-प्रसार करने के लिए बहुत से विद्यालयों की स्थापना की और लोगों की सेवा करने के लिए बहुत सी संस्थाएँ बनाईं।

राज्य में आर्य समाज के काम को बहुत बढ़ाया। उन दिनों आर्य समाज

पर सरकार का काफ़ी प्रकोप था। किन्तु आपने उस प्रकोप का कभी विचार नहीं किया।

इन सेवाओं के कारण लोग इन पर बड़ी श्रद्धा रखने लगे। लोगों ने इन्हें बहुत सी संस्थाओं का अध्यक्ष बना कर अपने प्रेम का परिचय दिया। सरकार भी इनकी योग्यता से प्रभावित थी। हैदराबाद में जो पहली विधान-सभा बनी, उसके ये सदस्य बनाये गये। सरकार ने सन् १९१८ में कारखानों की जाँच के लिए एक कमीशन नियुक्त किया। आप उसके भी सदस्य थे। उस कमीशन में आपके कार्य बड़े महत्व के थे। उस वर्ष गुलबर्गा की मिलों के मज़दूरों ने हड़ताल कर दी। सरकार तथा दनता के नेताओं ने हड़ताल बन्द करने की बड़ी कोशिश की, किन्तु किसी को सफलता न मिली। केशवराव जी के कहने पर मज़दूरों ने अपनी हड़ताल बन्द कर दी। इससे उनकी लोकप्रियता का पता चलता है।

केशवराव जी के मन में पश्चिमी देशों को देखने की बड़ी इच्छा थी। उन्होंने ६२ साल की अवस्था में इंग्लैण्ड की यात्रा की। वहाँ वे तीन महीने रहे।

केशवराव जी वृद्ध हो चले थे। लगातार परिश्रम के कारण उनका स्वास्थ्य भी गिरता जा रहा था। उनके हृदय में पूना के लिए बड़ा प्रेम था। वे अपने जीवन के अन्तिम दिनों में पूना गये। वहीं ६५ साल की अवस्था में उनका स्वर्गवास हो गया। इस समाचार से हैदराबाद राज्य भर में शोक छा गया। लोगों की आँखों में आँसू आ गये। लोगों ने उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए उनकी यादगार में "केशव स्मारक विद्यालय" की

स्थापना की।

केशवराव जी "सादा जीवन उच्च विचार" के सिद्धान्त को अच्छी तरह समझते थे। वे बड़ी सादगी से अपना जीवन बिताते थे। उन्हें किसी प्रकार का व्यसन न था। खाना खाने के बाद सुपारी तक खाने की आदत न थी। वे बड़ी शान्त प्रकृति के व्यक्ति थे। वे क्रोध नहीं करते थे और बच्चों एवं नौकरों के साथ भी बहुत अच्छा व्यवहार करते थे। केशवराव जी बड़े अच्छे वक्ता थे। यदि उन्हें किसी सभा में बोलना होता तो बहुत पहले से तैयारी करते। दूसरों का भाषण भी वे बड़े ध्यान से सुनते थे। उन्हें पुस्तकों के पढ़ने में बड़ा आनन्द आता था। वे प्रत्येक दिन कुछ निश्चित समय पुस्तकों के पढ़ने में लगाते। बुढ़ापे में जब वे पुस्तकें नहीं पढ़ सकते थे तो दूसरों से पढ़वा कर सुनते।

केशवराव जी अपनी आमदनी का अधिक भाग दान में खर्च करते थे। वे बहुत से विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता देते थे। कभी कभी दूसरों के लिए उन्हें बड़ा कष्ट भी उठाना पड़ता था।

केशवराव जी की जीवनी से हमें क्या शिक्षा मिलती है? केशवराव जी एक साधारण घर में पैदा हुए थे, किन्तु इसीलिए उनकी उन्नति में कोई बाधा नहीं हुई। बचपन में गरीबी के कारण उनकी शिक्षा का प्रबन्ध नहीं हुआ, फिर भी विद्या प्राप्त करने में वे पीछे नहीं रहे। सब से बड़ी बात यह है कि मनुष्य में चाह होनी चाहिए, राह बनने में मुश्किल नहीं होती। उनके जीवन से एक शिक्षा और मिलती है। मनुष्य मान और धन पा कर गर्व न करे और दीन अनाथों की सेवा सच्चे दिल से करता रहे तो उन्नति ही उन्नति है। जो

लोग थोड़ा-सा पैसा या मान पर फूले नहीं समाते उनकी उन्नति रुक जाती है और वे विशेष काम नहीं कर सकते। आदमी की उन्नति के लिए जरूरी है कि लगातार कोशिश की जाए। अगर एक बार प्रसिद्धि पा भी ली तो वह टिकाऊ नहीं रहती।

कौन जानता था कि जिस लड़के को लिखने के लिए कागज नहीं मिलता, जो दिन भर मेहनत करके रात को पढ़ता था वही लड़का बड़ा होने पर हैदराबाद हाईकोर्ट का जज बनेगा।

प्रत्येक लड़के को स्वर्गीय केशवराव जी की तरह प्रयत्न करना चाहिए। कोशिश करने से काम जरूर बनता है।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद
द्वारा
स्वतन्त्रता रजत जयन्ती
के उपलक्ष में
निःशुल्क उपहार

Library IIAS, Shimla
H 028.5 P 191 D
G2143

शक्ति नागपूर.